36

Proceedings of National Seminar on

New Trends in Research Methodology in Languages and Social Sciences

(February 13 and 14, 2015)

Sponsored by

Board of College and University Development,
Savitribai Phule Pune University

Organized By

SSSP Mandal's
Arts, Science and Commerce College,
Rahuri-413705 (Maharashtra)

अनुसंधान के संदर्भ स्त्रोत के रुप में हिंदी वेब साहित्य

प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई
एम.जे.एस.कॉलेज, श्रीगोंदा, ता.श्रीगोंदा जि.अहमदगनर
भ्रमणध्वनी :– 9545104957
Email:- bahiram241@gmail.com

मनुष्य की मुल प्रवृत्ति ही शोध की है। जिसके कारण मनुष्य प्राणी विकसित होता रहा है। अनुसंधान शब्द की व्याप्ति स्थल, काल, विषय और परिवेश के अनुरुप हो रही है। अनुसंधान का मनुष्य के जीवन में साधन के रुप में महत्व प्रबल हुआ है। राजनीति, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र, पत्रकारिता, साहित्य आदि हजारों क्षेत्रों में व्यापक बना है ।

अनुसंधान किसी भी क्षेत्र से संबधित हो उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना अनिवार्य है जिससे साहित्यिक अनुसंधान के प्रति विश्वासाहर्ता बढ़ जाती है । अगर इस बात को टालकर साहित्यिक अनुसंधानकर्ता केवल वह समीक्षक बनकर रह जाता है। इस संदर्भ में अपनी चिंता जताते हुए डॉ.कैलाशनाथ मिश्र कहते है,"हिंदी अनुसंधान आज जिस स्थिति में विद्यमान है, उसे अराजकता की संज्ञा दी जा सकती है। वस्तुत:अपने वर्षों की वय में जो प्रौढ़ता आनी चाहिए, उसकी अपेक्षा विश्रृंखलता, पिष्ट–पेषण एवं गतानुगतिकता को ही प्रक्षय प्राप्त हो रहा है, एक ओर पुरानी पीढ़ी अनुसंधान से हटकर स्वतंत्र समीक्षा की ओर अग्रसर है, तो दूसरी ओर नई पीढ़ी मात्र उपाधि के लिए अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रसर है, जिसके परिणाम स्वरुप अनुसंधान ग्रंथ मात्र विश्वविद्यालय के ग्रंथागार की शोभा मात्र बनकर रह गये है।"[१] यह कथन हिंदी भाषा एवं साहित्य की वर्तमान स्थिति बयान करता है।

हिंदी अनुसंधान का फलक व्यापक है। डॉ. हरवंशलाल शर्मा ने साहित्यिक अनुसंधान के क्षेत्रों का वर्गीकरण करने का सराहनीय प्रयास किया है। उनके वर्गीकरण के अनुसार (१) धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय, इतिहास, समाज एवं संस्कृति। (२) विशेष धारा या प्रवृत्ति। (३) विशेष कवि, लेखक, या ग्रंथ । (४) पंथ, संप्रदाय एवं

युग विशेष के साहित्कार । (४) पृष्ठभूमि, विकास एवं परम्परा– प्रभाव। (६) काव्य रुप । (७) काव्य शास्त्र। (८) साहित्य का इतिहास (९) ग्रंथ की भाषा एवं भाषा विज्ञान । (१०) ग्रंथ संपादन। इन सभी क्षेत्रों के साथ ही अनेक विभिन्न विधाओं मे हिंदी से जुड़े सभी प्रकार की नये आयाम अनुवाद, तक्नालॉजी, भारतीय साहित्य आदि में अनुसंधान की व्याप्ति हो रही है।

साहित्यिक अनुसंधान प्रक्रिया में संदर्भ स्त्रोतों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है। (१) मौलिक स्त्रोत (२) गौण स्त्रोत (३) तृतीय स्त्रोत । अनुसंधान के नियमों के अनुसार शोधार्थी मूल पाठ,अन्य लेखकों की कृतियों से तथा सैध्दान्तिक ग्रंथो से संदर्भ ले सकते है। इन सभी में समकालीन परिवेश में इंटरनेट से उपलब्ध सामग्री का स्थान निश्चित करना आवश्यक हो गया है। वर्ल्ड वाइड वेब के आने के कारण २१ वी सदी के आरंभ में करोड़ो वेब साइट्स और अरबों व वेब पेज अस्तित्व में आ गए। इस वेब पेज पर जो साहित्य छपता है, दिखता है उसे वेब साहित्य कहा जाता है। साहित्य के प्रचार – प्रसार और प्रकाशन का माध्यम वेब है। मुद्रित साहित्य अपनी स्थायी विशेषत: को लेकर चलता है, वेब साहित्य उसी का पर्याय बना है। हम यह कह सकते है कि, मुद्रित साहित्य का ही नया रुप वेब साहित्य है। वरिष्ट वेब समीक्षक शालीनी जोशी कहती है " वेब संसार अविश्वसनीय रुप से बदल रहा है। ... वेब ने जिंदगियों को इस तरह प्रभावित किया है कि लोगो का वेब के प्रति रवैया ही बदल गया है। "[२] यह टिप्पणि इसलिए है कि, माध्यमों पर विश्वास करनेवाले लोग अधिक है। जो इस तकनीक को नहीं जानते, कुछ जानना नहीं चाहते , उन्हें भी 'वेब पेज 'को समझने की अनिवार्यता बन गयी है। विकिपीडिया, कविता कोश, गद्यकोश के माध्यम से लगभग सभी हिंदी के प्रमुख रचनाकारों के साहित्य का परिचय पूरी दुनिया में पहुँचा है। इसके लिए अक्षर पर्व, अनुभूती ,अनुरोध , उर्वशी , कलायान, अभिव्यक्ति जानकी पुल, भारतीय पक्ष, रचनाकार लघुकथा, सृजनगाथा, हिंदी नेस्ट, हिंदी युग्म, हिंदी समय आदि ऑनलाईन

तकनीकि जानकारी का अभाव आदि के कारण कभी कभी यह संदर्भ स्त्रोत संशय के घेरे में आ जाते है। अनुसंधानकर्ता द्वारा कभी कभी वेब प्रसारित जानकारी का दुरुपयोग करने की संभावना बढ जाती है। इसलिए कई विश्वविद्यालयों द~वारा Plagiarism Checker जैसे सॉफ्ट~वेअर का उपयोग करके चोर्य कर्म पर लगाम लगाने की कोशिश की जा रही है । किंतु इनकी तकनिकि सीमाओं के कारण वह साहित्यिक अनुसंधान के लिए सफल नही हो पाया है।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है हि, हिंदी साहित्य के अनुसंधान हेतु इंटरनेट से उपलब्ध संदर्भो के लिए तकनीकि जानकारी के साथ ही वेबसाईट~स की अपडेशन का ध्यान रखना आवश्यक है, साथ ही किसी भी साहित्यकार की पंक्तिओं का गलत प्रयोग ना करे। अनुसंधान कार्य के लिए जितनी जिम्मेदारी अनुसंधानकर्ता की होती है, उससे अधिक वेब साहित्य का प्रकाशन करनेवाले लेखक,समिक्षक और प्रकाशक की भी होती है। यह बात सराहनीय है कि, नव रचनाकार और कुछ ममता कालीया, उदय प्रकाश, पद~मा सचदेव, मैत्रेयी पुष्पा,अशोक वाजपयी, सूर्यबाला जैसे अनेक समकालीन सशक्त रचनाधर्मि जुडे है। इंटरनेट पर प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का भी सराहनीय योगदान रहा है। जब तक हिंदी के सभी रचनाधर्मि लोग इससे नहीं जुडेंगे तब तक हिंदी अनुसंधान के नये द~वार खोलने में दिक्कते आती रहेगी । वेब पर संदर्भो की खोज करते समय फुहड़ कचरे से बचना आवश्यक है। क्योंकि यह कचरा फैलाने वाले नेट को गंभीरता से न लेते हुए समय बिताने का जरिया मानते है। आरंभिक उत्साह में कुछ लोग ब्लॉगस~] ट~वीटर और फेसबुक पर लिखते है और गंभीर लेखन के लिए मुद्रित माध्यमों पर अधिक विश्वास करते है किंतु वेब लेखन से कतराते है। यह अनुसंधान के लिए वेब साहित्य के प्रति अविश्वास प्रकट .करने जैसा है। इंटरनेट समकालीन पीढी का सशक्त माध्यम है। अनुसंधान हेतु समय और पैसे को बचाना हो तो इंटरनेट के वेब साहित्य को समृध्द् करना आवश्यक है। अनुसंधान के क्षेत्र में वेब साहित्य को समृध्द करना हर हिंदी सेवी का कर्तव्य है।

- संदर्भ ग्रंथ :—

1. डॉ.कैलाशनाथ मिश्र, हिंदी अनुसंधान वैज्ञानिक पध्दतियाँ ,चिंतन प्रकाशन,कानपुर,प्रथम संस्करण : २०१२ पृ: संदर्भेतर
2. डॉ.हरवंशलाल शर्मा , 'अनुसंधान की प्रक्रिया' सम्पादक—डॉ. सावित्री तथा डॉ.विजयेंद्र स्नातक, पृ. १३३—३४
3. वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रुझान — शालिनी जोशी, शिवप्रसाद जोशी पृ. २५
4. डॉ. सुनीलकुमार लवटे,हिंदी वेब साहित्य,राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली संस्करण : २०१३ पृ. ३३२
5. डॉ.पुनीत बिसारिया, शोध कैसे करे ? ॲनलेंटिक प्रकाशन,नयी दिल्ली संस्करण : २००७ पृ. ३९
6. http:// rachanakar.org

WEBLIOGRAPHY :-

1. http:// rachanakar.org

2.www.wikipedia.com